जनवरी 2019 वर्ष : 2 अंक :4

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

संस्थान के सभी वैज्ञानिकों, तकनीकी अधिकारियों, प्रशासनिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों, कुशल सहायक कर्मचारियों, शोध छात्र एवं छात्राओं और सिफरी मासिक समाचार के पाठकगण को मेरी तथा संस्थान के तरफ से नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनायें एवं मंगल कामनायें। वर्ष 2018 संस्थान के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा। गत वर्ष संस्थान की वार्षिक गृह पत्रिका को गणेश शंकर विद्यार्थी हिन्दी पत्रिका का प्रथम पुरस्कार प्राप्त होना। माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री द्वारा बिहार में मन विकास परियोजना का शुभारम्भ करना एवं संस्थान का भ्रमण करना, "कैज कल्चर स्ट्रक्चर" और "टिशू एबेडिंग मशीन" के लिए मूल डिजाइन पंजीकरण होना, केज ग्रो फीड का ट्रेड मार्क प्राप्त करना, तिलपिया लेक वायरस (टीएलवी) को जांचने के लिये पहचान किट का निर्माण, राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन परियोजना के अंतर्गत वाइल्ड मछलियों के बीजों का प्रजनन कर करोड़ों पोनों को गंगा नदी में प्रवाहित करना आदि संस्थान की सफलता को दर्शाते है। गत वर्ष संस्थान के द्वारा हजारो मछुआरो को मत्स्यपालन के लिए और वैज्ञानिको एवं शोध छात्रों को मात्स्यिकी के लिए जरूरी आधुनिक तकनीको पर प्रशिक्षण दिया गया। गत वर्ष संस्थान में कई वैज्ञानिको, तकनीकी अधिकारियों, प्रशासनिक कर्मचारियों और कुशल सहायक कर्मचारियों की नयी बहाली से मानव संसाधन में इज़ाफ़ा हुआ जिसका परिणाम आनेवाले वर्षों मे परिलक्षित होगा। इन सभी के अलावा संस्थान ने अपने शोध कार्यो को नई प्रगति दी है। जिसको अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय शोध पत्रों द्वारा विश्वव्यापी शोधकर्मियों तक पहुँचाया गया। इस संछिप्त प्रस्तावना के साथ पुनः आप सभी को नूतन वर्ष की हार्दिक शुभकामनायें।

मुख्य शोध उपलब्धियां

नमामि गंगे परियोजना के अंतर्गत दिनांक 4 एवं 5 दिसम्बर 2018 को संस्थान ने सिरसा, इलाहाबाद तथा जिला कौशाम्बी की गंगा नदी में लगभग भारतीय मत्स्य कार्प प्रजातियों के 3000 मछली के बीजों को छोड़ा गया। इसका उद्देश्य गंगा नदी की मत्स्य जैव विविधता का पुनरूत्थान तथा संरक्षण करना है।

मानसून पश्चात् काठजोड़ी, ओडिशा के सर्वेक्षण में इसके मीठाजल क्षेत्र में हिल्सा प्रजातियों की उपलब्धता देखी गई जो केवल निचले क्षेत्र तक ही सीमित पाई गई।

हुगली मातला ज्वारनदमुख में संस्थान द्वारा शीतकालीन अभिगमन बैगनेट मात्स्यिकी संबंधी सर्वेक्षण यह बताते हैं कि दिसम्बर 2018 मे फ्रेजरगंज और बक्खाली में *हारपेडोन नेहरियस* का प्रतिशत क्रमशः 15.15 और 5.68 पाया गया। शीतकालीन बैगनेट फिश लैंडिंग में यह देखा गया कि वर्ष 2000-2010 के दौरान *हारपेडोन नेहरियस* का प्रतिशत सबसे अधिक था पर गत् पांच वर्षों से इसकी लैंडिंग लगातार घटती जा रही है। फ्रेजरगंज में दिसम्बर 2018 में *सेकुटोर इन्डिएटर* एवं सारडीन्स (मुख्यतः *सारडीनेला गिबोसा* एवं *एस फिम्ब्रिएटा*) की प्रग्रहण में वृद्धि देखी गई जो लगभग क्रमशः 13.05 तथा 17.82 प्रतिशत थी ।

मध्य प्रदेश के दो महत्वपूर्ण जलाशयों के मत्स्य वासस्थान, जैवविविधता और मात्स्यिकी पर विस्तृत अध्ययन किया गया। सरदार सरोवर जलाशय के मध्य प्रदेश वाले अंश में 11 फैमिली और 30 जेनेरा की कुल 35 मत्स्य प्रजातियों को दर्ज किया गया। इस जलाशय में *स्पेराटा सिंघाला, लेबियो कलबासु* तथा बड़ी कैटफिश प्रजातियां पाई गईं। हलाली जलाशय में तिलापिया प्रजातियों (*ओरियोक्रोमिस मोसाम्बिकस* और *ओ. नाइलोटिकस*) की बहुलता लगभग 90 से 95 प्रतिशत तक पाई गई।

संस्थान ने पश्चिम बंगाल के बरहमपुर के बिष्णुपुर आर्द्रझील में *पंगासिएनोडोन हाइपोथालमस* मछलियों की बड़ी संख्या में होने वाली मृत्यु का सर्वेक्षण किया। इसमें यह देखा गया कि जलक्षेत्र शहर के मलजल एवं कूड़-कचरे के प्रवाहित होने के कारण प्रदूषित हो गया है। इन मछलियों का परीक्षण कर रोगजनक कीटाणुओं, *एरोमोनास* प्रजाति और *स्युडोमोनास* प्रजाति को पृथक किया गया।

संस्थान ने *पंगेशियस हाइपोथेलमस* पर ऑक्सीटेट्रासाइक्लिन के प्रभाव का विश्लेषण किया गया। इसमें यह देखा गया कि इससे सीरम बिलीरूबिन, एएलपी एव एएसटी के स्तर में वृद्धि होने के कारण हेपाटोक्सिसीटी का असर दिखाई देता है। इससे मछलियों के रक्त में लुकोसाइट की संख्या एवं ग्लोबुलिन के स्तर में भी वृद्धि होती है।

संस्थान के अध्ययन के अनुसार, मछलियों में आर्सेनिक से होने वाले हानिकरक प्रभाव को हल्दी के प्रयोग से कम किया जा सकता है।

संस्थान ने चिलिका लैगून के लिये एक “मास बैलेंस इकोपाथ मॉडल” को विकसित किया है।

संस्थान ने केरल के पेरियार और पुम्बा नदियों के सैम्पिलिंग स्टेशनों का मानचित्रीकरण किया है।

भाकृअनुप. केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर द्वारा ‘मात्स्यिकी अनुसंधानकार्यो में मेटाजेनोमिक्स का अवदान’ विषय पर एक कार्यशाला का उदघाटन किया गया

संस्थान में दो दिवसीय कार्यशाला (1-2 दिसम्बर. 2018) जो इनलैंड फिशेरीस सोसाइटी ऑफ इंडिया, बैरकपुर, भाकृअनुप- केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, और भाकृअनुप. भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया। मेटाजेनोमिक्स, हाल ही में उभरा जेनोमिक्स का एक उपविभाग हैं, जो माइक्रोबियल समुदायों के भीतर निहित जटिल जीनोम का विश्लेषण करने के लिए एक आशाजनक वैज्ञानिक पद्धति हैं। मेटाजेनोमिक्स की क्षमता के बावजूद, मत्स्य अनुसंधान में इसका उपयोग अभी तक ज्यादा नहीं हुआ हैं। यह कार्यशाला एनजीएस डेटा के प्रबंधन, सांझा, विश्लेषण और व्याख्या के लिए सार्वजनिक रूप से उपलब्ध संसाधनों के उपयोग करने के उद्देश्य से पानी, तलछट और मिट्टी,के साथ साथ त्वचा और एंटीबायोटिक प्रतिरोध माइक्रोबायोम जैसे विभिन्न विषयों के ऊपर आयोजित हैं। डॉ. जॉर्ज जॉन, पूर्व कुलपति, बिरसा मुंडा कृषि विश्वविद्यालय,झारखंड कार्यशाला के प्रधान अतिथि थे। डॉ. पी. के. अग्रवाल उप महानिदेशक, एन एस एफ,भाकृअनुप., और डॉ. अनिल रॉय, प्रभागाध्यक्ष भाकृअनुप. भारतीय कृषि

सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान, के प्रभागाद्याछ इस अवसर में सम्मानीय अतिथि रहे। विभिन्न संस्थानों से जैसे आई. जी. आई. बी. नई दिल्ली असम कृषि विश्वविद्यालय, ओयूएटी, राष्ट्रीय बायोमेडिकल संस्थान,भारतीय रासायनिक एवं जीवविज्ञान संस्थान, कोलकाता, हैजा और आंत्र रोग संस्थान, कोलकाता, भाकृअनुप -सीआईएफए, भुवनेश्वर, भाकृअनुप-सीआईबीए, चेन्नई के 70 से भी अधिक शोधकर्ता / वैज्ञानिक, ने इस कार्यशाला में भाग लिया। डॉ. बि. के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, और कार्यशाला के संयोजक ने यहा उम्मीद व्यक्त कि , की इस कार्यशाला के द्वारा शोध कार्यो में उत्पन्न चुनौतियों पर चर्चा करने के लिए, सभी प्रतिभागियों को एक मंच प्रदान होगा।

भारतीय पुलिस सेवा, परिवीक्षाधीन अधिकारियों ने एक महीने के प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान भाकृअनुप.-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, का दौरा किया

भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान में भारतीय पुलिस सेवा, पश्चिम बंगाल कैडर के परिवीक्षाधीन अधिकारियों के लिए एक दिवसीय आलोचनात्मक सत्र का आयोजन किया गया। 1 दिसम्बर, को 11 परिवीक्षाधीन अधिकारियों ने स्वामी विवेकानन्द राज्य पुलिस अकादेमी, छावनी, कोलकाता, पश्चिम बंगाल से केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान आए । डॉ. बि. के. दास, निदेशक , केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने अधिकारियों से बातचीत की और देश के मछली उत्पादन को बढ़ाने

के लिए और 2022 तक मछुआरो की आय दोगुना करने के लिए अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी, और केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान की भूमिका को समझाया । डॉ. दास ने समाज में भटके हुए लोगों को मुख्य धारा में वापस लाने के लिए अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी और जलीए संवर्धन की भूमिका को समझाया। अधिकारियों को भाकृअनुप.-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के दृष्टिकोण, लक्ष्य, और अधिदेश से अवगत कराया गया। अधिकारियों ने मछलीघर, रंगीन सजावटी मछलीयों की हैचरी, पुनःसंक्रमणीय (रिसर्कुलेटरी) जलीय कृषि प्रणाली और संस्थान के विभिन्न सुसज्जित प्रयोगशालायों का दौरा किया।

भाकृअनुप- केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने दिसम्बर को कृषि शिक्षा दिवस का आयोजन

भाकृअनुप. केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान , बैरकपुर ने राष्ट्र निर्माण में कृषि शिक्षा के महत्व को उजागर करने के लिए 3 दिसम्बर को "कृषि शिक्षा दिवस" को एक भव्य तरीके से मनाया। डॉ. जॉर्ज जॉन, पूर्व उपकुलपति, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय और

प्रख्यात मछली अनुवांशिकीविद और जैव प्रोद्योगिकीविद ने मुख्य अतिथि के रूप मे कार्यक्रम की अध्यक्षता की। डॉ. संजीव बंध्योपाधाय, भारतीय मौसम विभाग के उपमहानिदेशक और एक प्रतिष्ठित शिक्षाविद ने भी इस अवसर पर सम्मानीत अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

तीन वर्ष पूर्व, भारत सरकार ने कृषि में दीर्घकालिक और सतत् विकास के लिए कृषि शिक्षा, अनुसंधान और विस्तार को मजबूत करने की दिशा में कदम बढ़ाते हुए राष्ट्रीय कृषि शिक्षा दिवस मनाने का फैसला किया। उन्नत प्रद्योगिकी के उपयोग को बढ़ाने के लिए कृषि शिक्षा का पर्याप्त सुढ़ृढ़ीकरण आवश्यक हैं। 3 दिसम्बर 2018, को हमारे प्रथम कृषि मंत्री डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी की याद में भारत भर में कृषि विज्ञान केन्द्रों सहित सभी भाकृअनुप. संस्थानों में कृषि शिक्षा दिवस मनाया गया। ए.पी.सी कॉलेज, न्यू बैरकपुर के औद्योगिक मछली और मत्स्य पालन के विज्ञान में स्नातक कर रहे छात्रों, पी.के. रॉय मेमोरियल कॉलेज, धनबाद के मत्स्य पालन में विशेषज्ञता लेकर जीव विज्ञान में परस्नातक कर रहे छात्रों और विनोबा भावे विश्वविद्याल, हजारीबाग के 65 छात्रों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

व्याख्यान के बाद प्रयोगशाला दर्शन और जलीय क्षेत्र का दौरा, विभिन्न प्रदर्शन आदि उनके लिए आयोजित किया गया। परस्पर संवाद के दौरान कुछ छात्रों ने देश में कृषि शिक्षा के महत्व पर अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. बि. के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय

मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ,बैरकपुर ने अपने उद्घाटन भाषण में भारत के वर्तमान परिदृश्य में कृषि शिक्षा की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। उन्होने छात्रों के साथ संवाद किया और उन्हें राष्ट्र निर्माण में योगदान करने के लिए प्रेरित किया। डॉ. बंद्योपाध्याय ने कृषि और मत्स्य पालन क्षेत्र में मौसम संबंधी पूर्वानुमानों के महत्व को दर्शाते हुए एक प्रस्तुतीकरण दिया। अंत में डॉ. जॉर्ज जॉन ने छात्रों को संबोधित किया और उन्हे भविष्य में कृषि और मत्स्य पालन के क्षेत्र में योगदान करने के लिए प्रेरित किया।

संस्थान मुख्यालय, बैरकपुर में कृषिरत महिला दिवस कार्यक्रम का आयोजन

भारतीय महिलाएं कृषि क्षेत्र में अपना उल्लेखनीय योगदान देती है , साथ ही साथ के साथ ही भारतीय कृषि समुदाय का एक महत्वपूर्ण हिस्सा भी हैं। भारतीय कृषि क्षेत्र में उनकी भूमिका और महत्व को पहचानने और स्वीकार करने के लिए 4 दिसम्बर को सभी भाकृअनुप. संस्थानो में 'कृषिरत महिला दिवस' मनाया जाता हैं। भाकृअनुप- केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने इस महत्वपूर्ण प्रयास में सक्रिय पहल की और मुख्यालय में एक विचार मंथन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पाँच प्रख्यात महिला वैज्ञानिकों और शिक्षाविदों ने वर्तमान स्थिति के संदर्भ में कृषि सम्बन्धित क्षेत्रों कि महिलायों के योगदान पर अपनी प्रस्तुतियों के साथ इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। डॉ. के. सी. डोरा, पश्चिम बंगाल पशु और मत्स्य विज्ञान विश्वविद्यालय के भूतपूर्व डीन भी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे । इस कार्यक्रम में 40 से भी अधिक स्वंय सहायता समूहों से महिला कृषकों ने भाग लिया । प्रो. ब्रंजुल भट्टाचार्य,प्रमुख सांख्यिकी विभाग, वि.च. कृ. वि. भी ने महिलाओं का कृषि क्षेत्र में महत्व नामक विषय पर अपने विचार रखे। विधान चंद्र कृषि विश्व विद्यालय से प्रो. सुहरीता चक्रवर्ती ने फ्लॉरिकल्चर में महिलाओं की भूमिका और उनके लिए एक आजीविका के विकल्प रूप के बारे में बात की। प्रो. कल्याणी रॉय, स्त्री रोग और प्रसूति विभाग की प्रमुख, पश्चिम बंगाल पशु और मत्स्य विज्ञान विश्वविद्यालय ने अपनी प्रस्तुती में पशुधन उत्पादन में महिलायों की भूमिका पर ज़ोर दिया । डॉ. लोपामुद्रा हलधर, सहप्रध्यापक, पश्चिम बंगाल पशु और मत्स्य विज्ञान विश्वविद्यालय ने डेयरी में महिलायों की भूमिका पर अपनी प्रस्तुती दी। डॉ. अर्चना सिन्हा, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप.- केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने मछली पालन में महिलायों के योगदान के बारे में बताया। संस्थान के माननीय निदेशक डॉ. बि. के. दास, ने सभी प्रतिभागियों से इस विषय पर विचार विमर्श किया। उन्होने स्पष्ट रूप से देश की कृषि और संबंध क्षेत्र में महिलायों की भूमिका पर प्रकाश डाला। 'कृषि और संबंध क्षेत्र में महिलाएं' नाम से एक व्याख्यान संकलन इस अवसर पर प्रकाशित किया गया। इस संकलन में सभी लेखनी महिला वैज्ञानिकों और शिक्षाविदों द्वारा लिखी गयी हैं। कार्यक्रम में मौजूद विशेषज्ञों और कृषि की महिलायों के बीच एक क्रियात्मक सत्र भी संपन्न किया गया।

भाकृअनुप.-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, ने कृषकों के साथ विश्व मृदा दिवस -2018 का आयोजन

कृषि उत्पादन और पर्यावरणीय स्वास्थ्य को बनाए रखने में मृदा के स्वास्थ्य के महत्व को उजागर करने के लिए 5 दिसम्बर, 2018 को

संस्थान में'विश्व मृदा दिवस' का आयोजन किया गया। डॉ. सुब्रत मंडल, मुख्या महाप्रबंधक, नाबार्ड, कोलकाता ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम की अध्यक्षता की और सम्मानीय अतिथि डॉ. सुशांत कुमार पाल, प्रो. कृषि रसायन और मृदा विज्ञान, बिधान चंद्र कृषि विश्व विद्यालय, मोहनपुर, नादिया, जो एक प्रसिद्ध मृदा वैज्ञानिक है, ने भी इस अवसर पर अपने विचार रखे। कार्यक्रम में उत्तर और दक्षिण 24 परगना, नादिया और हुगली के लगभग 100 किसानों ने भाग लिया। माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदीजी के एक फ्लैगशिप कार्यक्रम मेरा गाँव मेरा गौरव (एमजीएमजी) के तहत, पश्चिम बंगाल के चार जिलों में स्थित 50 गाँवों के 10 समूहों से मृदा के नमूने एकत्र किए गए। इस अवसर पर 155 किसानों के बीच मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरित किए गए। मृदा स्वास्थ्य और टिकाऊ कृषि प्रबंधन पर डॉ. सुशांत कुमार पाल, ने अपना व्याख्यान दिया। उन्होंने पिछले दो दशकों के दौरान खेतों में कार्बनिक पदार्थों की बहुलता में कमी के कारण वर्तमान काल में मृदा कि स्थिति के महत्व के आवश्यकता पर जोर दिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. सुब्रत मंडल ने इष्टतम पोषक अनुपात सहित मिट्टी के स्वास्थ्य पहलुओं पर अपनी टिप्पणियों के साथ सभा को संबोधित किया। उन्होंने घोषणा की कि मृदा कार्बन के नुकसान के कारण, मृदा संरचनाएं अत्यधिक मिट्टी के क्षरण, की ओर अग्रसर हो रही हैं। उन्होंने स्थायी कृषि के लिए गोबर, गोमूत्र और नीम आधारित उत्पादों का उपयोग कर जैविक खेती की वकालत की। डॉ. बि. के. दास, निदेशक, भाकृअनुप- केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, ने अपने उद्घाटन भाषण में किसानों से आग्रह किया कि वे अपने संबंधित क्षेत्रों की मिट्टी की सेहत पर ध्यान दें, जो उचित खाद की कमी के कारण खराब हो रही हैं।

उन्होंने मृदा स्वास्थ्य कार्ड की तरह ही तालाब हेल्थ कार्ड की वकालत की, और ग्रामीण भारत में 2022 तक मछली उत्पादन प्रणाली को बढ़ाने के लिए 2022 तक मत्स्य उत्पादन किसानों की आय दोगुनी करने के लिए दूसरी नील क्रांति की ओर लक्षित किया। इस अवसर पर किसानों ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। कृषको ने आने वाले दिनों में मृदा देखरेख करने की शपथ ली। इस दिवस पर कृषि में मृदा के महत्व विषय पर एक संक्षिप्त प्रस्तुति प्रधान वैज्ञानिक डॉ. श्रीकांत सामंत ने दी। संस्थान का मानना है कि किसानों के लिए भविष्य में इस कार्यक्रम का लंबे समय तक प्रभाव रहेगा।

बिहार के खगड़िया जिले के मछुआरों का कौशल विकास और क्षमता निर्माण कार्यक्रम

बिहार के खगड़िया जिले के 30 मछुआरों के लिए भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान बैरकपुर में 7 से 13 दिसंबर, 2018 के दौरान अंतर्स्थलीय मत्स्य विकास एवं प्रबंधन बिषय पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के प्रति किसानों के ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण की खाई को पाटना था। प्रशिक्षुओं को अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षित किया गया, जिसमें मिट्टी और जल रसायन, प्रबंधन, मछली रोग और उनके उपचारात्मक उपाय आदि शामिल हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम संस्थान से प्रतिक्रिया के संग्रह और एक औपचारिक वैध सत्र के साथ समाप्त हुआ। संस्थान के निदेशक ने प्रशिक्षुओं के साथ बातचीत की और मछुआरों के लिए कई आजीविका सुरक्षा के उपाय और आय सृजन विकल्पों के बारे में चर्चा की। प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वय डॉ. ए. के. दास, प्रमुख वैज्ञानिक, भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर द्वारा किया गया।

जन जागरूकता के माध्यम से हिल्सा बहाली कार्यक्रम

भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने 20 दिसंबर 2018 को कोलाघाट फार्मर्स क्लब के सहयोग से कोलाघाट के

मछुआरों के लिए हिल्सा संरक्षण पर एक बड़े पैमाने पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी के साथ जुड़े

समकालीन मुद्दों विशेष रूप से, हिलसा मत्स्य के पालन के बारे में मछुआरों के बीच जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता को देखते , संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के.दास ने कोलाघाट के मछुआरों के लिए जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने की पहल की। इस अवसर पर लगभग 100 मछुआरे और किसान एकत्रित हुए। डॉ. बि .के. दास, निदेशक भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के ने अपने वक्तव्य में मछुआरों को संबोधित किया और उनके साथ मत्स्य पालन के वर्तमान मुद्दों और चुनौतियों के बारे में बातचीत की और साथ ही मत्स्य पालन के माध्यम से आय सृजन और आजीविका बढ़ाने के विशाल अवसरों के बारे में बताया। उन्होंने अपने भाषण में हिल्सा संरक्षण के महत्व और उस के उपायों पर ध्यान दिलया। डॉ. दिलीप कुमार दास, पूर्व प्रमुख, मृदा विज्ञान विभाग विधानचन्द्र कृषि विश्वविद्यलय विश्वविद्यालय, मोहनपुर ने भी अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन में

मिट्टी के महत्व के बारे में मछुआरों के साथ बातचीत की। संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. श्रीकांत सामंता ने जलीय उत्पादन में पानी और तलछट की भूमिका पर बात की।संस्थान के अन्य प्रधान वैज्ञानिक डॉ. एस के मन्ना, और प्रोफेसर सुजॉय कर ,कल्याणी विश्वविद्यालय ने मछली रोगों और उनके नियंत्रण उपायों पर विस्तृत चर्चा की।संस्थान के ही अन्य प्रधान वैज्ञानिक डॉ. आर. के. मन्ना, ने हिलसा मत्स्य पालन के वर्तमान परिदृश्य और रूढ़िवादी पहलुओ से निपटने के उपायों पर चर्चा की। कार्यक्रम के बाद विशेषज्ञों और किसानों के बीच विचार विनिमय हुया। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. श्रीकांत सामंता और कोलाघाट फार्मर्स क्लब के सदस्यों द्वारा अच्छी तरह से किया गया था।

बीरभूम के जनजातीय मछुआरों को त्याग किए हुए मौसमी जलशयों के उपयोग के बारे में सूचित किया गया

भाकृअनुप -केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने रथिन्द्र कृषि विज्ञान केंद्र, विश्व भारती, शान्तिनिकेतन के सहयोग से रायपुर, बीरभूम, पश्चिम बंगाल में जनजातीय उप-योजना के तहत "सामाजिक -आर्थिक सुधार के लिए जल संरक्षण में मत्स्य विकास पर जन जागरूकता

शिविर का आयोजन किया। बीरभूम पश्चिम बंगाल के आदिवासी बहुल जिले में से एक है। यह मूल रूप से, उप आर्द्र, अर्ध शुष्क क्षेत्र मन जाता है। बीरभूम जिले के रायपुर - कांकुटिया गाँवों में असंख्य जल निकाय हैं। स्थानीय मछुआरे इन संसाधनों की मत्स्य क्षमता से अनभिज्ञ हैं। जागरूकता शिविर का आयोजन उच्च आय के लिए वैज्ञानिक हस्तक्षेप के साथ पालन आधारित मत्स्य पालन के लिए त्यागे गए मौसमी जलाशयों का उपयोग करने के उद्देश्य से किया गया था। भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के.दास ने मछुआरों को सलाह दी कि वे जलीय खरपतवार साफ करें और अच्छे अंगुलिकाओं का जलाशयों में पालन करें जिससे उनकी आय में वृद्धि हो। मछुआरों और वैज्ञानिकों

के बीच एक विचार विनिमय सत्र भी आयोजित किया गया था। मछुआरों द्वारा मत्स्य विकास के संबंध में पूछे गए प्रश्नों का वैज्ञानिको ने उत्तर दिया। वैज्ञानिकों ने मछुआरों को सलाह दी कि वे उपलब्ध छोटे तालाबों में मछली के बीज को रखे और बड़े जल निकायों में उन्नत अंगुलिकाओं का संचयन करें। त्यागे गए जलाशयों के एक हिस्से की सफाई के बाद पेन की स्थापना करके बीज पालन करना एक अच्छा विकल्प हो सकता है। आदिवासी महिलाओं को उनकी आजीविका में सुधार के लिए रंगीन मछली पालन के बारे में जागरूक किया गया। डॉ. सौरव मंडल, आई / सी रथिंद्र, कृषि विज्ञान केंद्र, और श्री कृष्णा मित्र,

एसएमएस, रथिंद्र कृषि विज्ञान केंद्र, ने सत्र के सूत्रधार के रूप में कार्य किया। जागरूकता शिविर में संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. पी.के.परिदा, डॉ. ए.के. दास और डॉ. अपर्णा रॉय उपस्थित थे। शिविर में 120 से अधिक आदिवासी मछुआरों ने भाग लिया। कार्यक्रम के पूरा होने के बाद आदिवासी मछुआरों और स्थानीय लोगों के सक्रिय भागीदारी के साथ एक सफाई अभियान चलाया गया। दैनिक जीवन में स्वच्छता और उसके महत्व के बारे में महिला प्रतिभागियों को जागरूक किया गया।

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी, कोलकाता के छात्रों के लिए भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान बैरकपुर में संस्थान का संदर्शन

भाकृअनुप - केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान बैरकपुर में नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी, कोलकाता से 18 से 20 दिसंबर, 2018 तक 25 स्नातक छात्रों के लिए तीन दिवसीय संस्थान संदर्शन का आयोजन किया गया था। छात्रों को डॉ. बि.के.दास, संस्थान के निदेशक ने संस्थान में उनका स्वागत किया, उन्हें संस्थान की गतिविधियों और लक्ष्यों के बारे में जानकारी दी।

उन्होंने उनके साथ हस्तकला और फैशन उद्योग में मत्स्य क्षेत्र के विकास पर भी चर्चा की और उन्हें मत्स्य पालन के साथ फैशन को जोड़कर नवीन विचार देने का एक कार्य सौंपा। भाकृअनुप की संगठनात्मक संरचना भी उन्हें समझाई गई थी। छात्रों को संस्थान केने मछलीघर, रंगीन सजावटी मछलीयों की हैचरी, पुनःसंक्रमणीय (रिसर्कुलेटरी) जलीय कृषि प्रणाली से भी अवगत कराया गया। दूसरे दिन, टीम के निर्माण और नेतृत्व के सिद्धांतों और अभ्यासों पर छात्रों के लिए एक विचार विनिमय सत्र की व्यवस्था की गई। जिसमें छात्रों ने सक्रिय रूप से भाग लिया और अपने व्यापारिक विचारों को प्रस्तुत किया कि कैसे फैशन संबंधी सामान में मत्स्य पालन से संबंधित वस्तुओं को शामिल किया जा सकता है। निदेशक महोदय ने भविष्य में अभिनव व्यावसायिक विचारों के साथ उद्यमिता विकास के लिए उन्हें प्रोत्साहित किया। उन्होंने मत्स्य विकास, मत्स्य संरक्षण और मछुआरों की आजीविका सुरक्षा के प्रति हमारी सामाजिक जिम्मेदारियों पर संदेश देने के लिए एक मंच के रूप में फैशन का उपयोग करने के लिए उन्हें प्रेरित किया। तीसरे दिन उनके लिए स्थानीय गंगा नदी तट पर एक क्षेत्र यात्रा की व्यवस्था की गई।

बर्दवान के जनजातीय मछुआरों को आद्रभूमि में समुदाय आधारित पेन प्रबंधनजागरूकता कार्यक्रम

भाकृअनुप -केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने 28 दिसम्बर, 2018 को गर्दनमारी आद्रभूमि , भटार, बर्दवान में पेन प्रबंधन पर एक बड़े पैमाने पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। जिसमें 70 महिलाओं सहित 150 से अधिक मछुआरों ने भाग लिया। भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान गर्दनमारी आद्रभूमि में संचयन आधारित मत्स्य पालन के माध्यम से आदिवासी मछुआरों की आजीविका विकास पर काम कर रहा है। वर्तमान वर्ष में, 0.1 हेक्टेयर एचडीपीई पेन को आद्रभूमि में स्थापित किया गया है और

बीज पालन का प्रदर्शन जारी है। आद्रभूमि के लिए उन्नत अंगुलिकाओं के लिए लगभग 25,000 मछली के बीजों को बेड़े में रखा गया है। भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ.बि.के. दास ने मछुआरों को आय और व्यय का रिकॉर्ड बनाए रखने की सलाह दी है और विकास के लिए आद्रभूमि में भविष्य के निवेश के लिए उपयोग करने के लिए कुछ राशि बचाने की सलाह दी है। उन्होंने मछुआरों द्वारा अपनी सोसायटी को पंजीकृत करने और बैंक खाता खोलने के लिए किए गए प्रयासों की भी सराहना की। उन्होंने घर के पिछवाड़े में रंगीन मछलीयों की खेती के महत्व पर पक्ष डाला और रंगीन सजावटी मछली के पालन और वर्मीकम्पोस्ट पर महिला समूह को एक क्षमता निर्माण प्रशिक्षण प्रदान करने का भी वादा किया। प्रतिभागी आदिवासी मछुआरों और स्थानीय लोगों के साथ एक स्वछता अभियान चलाया गया और प्रतिभागियों को दैनिक जीवन में स्वच्छता और स्वच्छता के महत्व के बारे में जागरूक किया गया। संस्थान द्वारा कृषक समुदायों से संबंधित समितियों को नियमित रूप से उनकी आय और जीवन यापन की बेहतरी के लिए दिशा निर्देश दिया जाता रहाहै। डॉ. ए. के. दास, प्रधान वैज्ञानिक; डॉ. ए. रॉय, वैज्ञानिक और डॉ. पी. के. परिदा, वैज्ञानिक और नोडल अधिकारी, टीएसपी ने भी आदिवासी मछुआरों के साथ बातचीत की और कार्यक्रम को सुविधाजनक बनाया।

बैठक

संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने व्लर्ड फिश द्वारा पेनांग, मलेशिया में आयोजित कार्यशाला में भाग लिया। कार्यशाला का मकसद उभरते वैश्विक और क्षेत्रीय मुद्दों के संदर्भ में वर्ल्ड फिश -भाकृअनुप अनुसंधान और विकास रणनीति के निर्धारण पर विचार करना एवं "खाद्य सुरक्षा और पोषण के लिए मत्स्य पालन और जलीय कृषि के वृधि परयोजना" पर विचार विमर्श करना था

संस्थान के वैज्ञानिको ने दिनांक 11 दिसम्बर 2018 को व्लर्ड फिश-सिफरी के संयुक्त परियोजना संबंधी बैठक में भाग लिया।

संस्थान के वैज्ञानिको ने दिनांक 26 नवम्बर से 5 दिसम्बर 2018 के दौरान नेशनल फेसिलिटेटर डेवेलपमेन्ट प्रोग्राम के तहत सीसीएस राष्ट्रीय कृषि विपणन संस्थान, जयपुर, राजस्थान में आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया।

संस्थान में दिनांक 26 से 30 नवम्बर 2018 के दौरान "अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन हेतु ओपन सोर्स जीआईएस सॉफ्टवेयर के प्रयोग" पर प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।

संस्थान में दिनांक 04 दिसम्बर 2018 को मात्स्यिकी महाविद्यालय, रत्नागिरी के 28 छात्रों और 3 संकाय सदस्यों का आगमन हुआ।

दिनांक 04 से 05 दिसम्बर 2018 को नमामि गंगे कार्यक्रम के अंतर्गत सिरसा, इलाहाबाद और कड़ा धाम, कौसाम्बि में जन जागरूकता कार्यक्रम के अंर्तगत मछलियों को जलक्षेत्र में छोड़ा गया। संस्थान में दिनांक 06 दिसम्बर 2018 को मात्स्यिकी विभाग, पश्चिम बंगाल के 47 कृषकों को प्रशिक्षण दिया गया।

जनजाति उपयोजना के तहत संस्थान में दिनांक 07 से 09 दिसम्बर 2018 को मयुरभंज जिले के मित्रापुर खदान में पिंजरे में मत्स्य पालन की संभावनाओं पर एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया।

संस्थान के निदेशक और जलाशय व आर्द्रक्षेत्र मात्स्यिकी प्रभाग के वैज्ञानिक ने दिनांक 10 दिसम्बर 2018 को नाबार्ड द्वारा आयोजित स्टेट लेवेल कन्सल्टेटिव समिति की बैठक में भाग लिया। इस बैठक का उद्देश्य पश्चिम बंगाल में फारमर्स प्रोड्युस ग्रुप के कर्यकलापों पर विचार विमर्श करना था।

संस्थान के गुवाहाटी क्षेत्रीय केन्द्र द्वारा दिनांक 13 से 15 दिसम्बर 2018 तक "आजीविका उन्नयन हेतु बील मात्स्यिकी प्रबंधन" पर एक कौशल विकास प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।

संस्थान में पंचवर्षीय समीक्षा टीम (2013-2918) की बैठक संस्थान मुख्यालय में दिनांक 14 से 15 दिसम्बर 2018 के दौरान आयोजित की गई।

संस्थान के निदेशक ने दिनांक 14 से 15 दिसम्बर 2018 को फिशकोपेड द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। इस कार्यक्रम में विभिन्न मछुआरा सहकारी समितियों से 48 मछुआरों ने भाग लिया।

संस्थान में दिनांक 18 दिसम्बर 2018 को मात्स्यिकी महाविद्यालय, पानागड़ के स्नातक (मात्स्यिकी) छात्रों और 2 संकाय सदस्यों का आगमन हुआ।

संस्थान में दिनांक 19 दिसम्बर से 23 दिसम्बर 2018 के दौरान मात्स्यिकी महाविद्यालय, केरल के 6 अधिकारियों के लिये ''अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन'' पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

संस्थान के निदेशक एवं जलाशय व आर्द्रक्षेत्र मात्स्यिकी प्रभाग के वैज्ञानिकों ने दिनांक 20 दिसम्बर 2018 को नाबार्ड द्वारा आयोजित अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन की संभावनायें विषय पर साइंस हॉबी सेन्टर, कोलाघाट पूर्व मेदिनीपुर में जनजागरूकता कार्यक्रम में भाग लिया।

संस्थान में दिनांक 21 दिसम्बर 2018 को 50 स्कुली बच्चों एवं 14 शिक्षकों का संस्थान एक्वेरियम में आगमन हुआ।

जनजाति उपयोजना कार्यक्रम के तहत पुरूलिया जिले के 27 मछुआरों को चेकडैम में मात्स्यिकी प्रबंधन पर प्रशिक्षण दिया गया।

संस्थान ने दिनांक 20 दिसम्बर 2018 को पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा आयोजित बनगांव में महकमा कृषि मेले में भाग लिया।

संस्थान ने दिनांक 20 से 29 दिसम्बर 2018 तक तीर्थ सोसायटी, कुलताली, दक्षिण 24 परगना, पश्चिम बंगाल द्वारा आयोजित सुन्दरवन कृषि मेला व लोकसंस्कृति उत्सव - 2018 में भाग लिया।

सम्पादक मंडल की तरफ से

सिफरी मासिक समाचार के सभी पाठको को सम्पादक मंडल की तरफ से नववर्ष की हार्दिक सुभकामनायें।

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र, राजीव लाल, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

संकलन एवं सम्पादन सहायता: मो. कसिम फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्था,(आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन) बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120 भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91 फैक्स: +91-33-25920388 ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है